आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 7 अंक : 01 सितम्बर-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

राज्य का ई-गवर्नेन्स अवार्ड राजुवास को

मुख्यमंत्री गहलोत ने कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को ई-गवर्नेन्स अवार्ड प्रदान किया

राज्य के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 19 अगस्त को वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को "ई– गवर्नेन्स राजस्थान अवार्ड" प्रदान किया। मुख्यमंत्री ने राज्य के सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग द्वारा बिड़ला ऑडिटोरियम, जयपुर में आयोजित "राजस्थान नवाचार मीट" समारोह में यह पुरस्कार प्रदान किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय में एकीकृत विश्वविद्यालय प्रबंधन प्रणाली को विकसित कर वेटरनरी विश्व विद्यालय को पूरी तरह ई–गवर्नेन्स मोड पर लाये जाने के कारण इस पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है। विश्वविद्यालय में "एकीकृत विश्वविद्यालय प्रबंधन प्रणाली" की स्थापना करके विद्यार्थियों के प्रवेश, भर्ती एवं परीक्षा से संबंधित सभी कार्य कम्प्यूटरीकृत हो गये हैं। संस्थापन, बजट–वित्त, पेन्शन, पशुचिकित्सालय के प्रबंधन कार्यों को पूरी तरह ई–गवर्नेन्स के तहत किया गया है। सभी कार्मिकों के पे–रोल, पेंशन, पी.एफ. इत्यादि खातों को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है। विश्वविद्यालय में कार्मिक पोर्टल और विद्यार्थी पोर्टल भी स्थापित किये गए है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में तृतीय दीक्षान्त समारोह का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्त समारोह में 8 अगस्त को पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के 669 छात्र–छात्राओं को उपाधियों और 30 को स्वर्ण पदक तथा 1 कुलाधिपति स्वर्ण पदक से अलंकृत किया। समारोह की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने की। समारोह के मुख्य अतिथि कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया, विशिष्ट अतिथि उच्च शिक्षा राज्यमंत्री श्री भंवर सिंह भाटी थे। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के चैयरमैन प्रो. ए. के. मिश्रा ने दीक्षांत भाषण और खाजुवाला विधायक श्री गोविंदराम ने समारोह को सम्बोधित किया।

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार तृतीय दीक्षान्त समारोह 2019 की झलकियां

सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक का उद्घाटन
पशुचिकित्सकों के लिए मूकप्राणियों और पशुपालकों की सेवा की चुनौती-श्री कटारिया

पशुपालन मंत्री श्री लालचन्द कटारिया, उच्च शिक्षा राज्यमंत्री श्री भंवर सिंह भाटी, विधायक गोविंदराम और कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने विश्वविद्यालय के सर्जरी विभाग में सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक का उद्घाटन किया। इस ब्लॉक में सी.टी. स्केन इकाई, सोनोग्राफी इकाई, लैप्रोस्कोपी इकाई, लेजर सर्जरी इकाई, नेत्र रोग इकाई, ऑर्थोपेडिक इकाई तथा दंत रोग इकाईयां हैं। इन सभी इकाईयों में पशुचिकित्सा में काम आने वाले अत्याधुनिक उपकरण स्थापित किये गये हैं। इन उपकरणों की सहायता से सभी प्रकार के पशुओं के विभिन्न रोगों का निदान व उपचार किया जायेगा, जिसका सीधा लाभ पशुपालकों व किसानों को मिलेगा। इस अवसर पर प्रो. राकेश राव, प्रो. आर.के. धूड़िया, प्रो. टी.के. गहलोत व डॉ. प्रवीण बिश्नोई सहित डीन–डायरेक्टर उपस्थित थे।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में 11.95 करोड़ रू. राशि मंजूर, 8 नई परियोजना को मिली स्वीकृति

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना "रफ्तार" के अन्तर्गत वेटरनरी विश्वविद्यालय को वर्ष 2019–20 के लिए 11 करोड़ 95 लाख रूपये अनुदान की स्वीकृति प्रदान की है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि इससे विश्वविद्यालय में 8 नई परियोजनाएं प्रारंभ की जाएगी जिस पर 9.60 करोड़ रूपये राशि व्यय होगी। पूर्व में संचालित की जा रही 4 परियोजनाओं के लिए भी 2 करोड़ 35 लाख रू. की राशि की भी मंजूरी प्रदान की गई है। नई परियोजनाओं के तहत दक्षिणी राजस्थान में गाय–भैंसों की प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए राजकीय पैरावेट को प्रशिक्षण दिया जाएगा। राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन की दुग्ध समितियों के सचिवों और प्रयोगशाला कार्मिकों को स्वच्छ और गुणवत्ता वाले दुग्ध उत्पादन के लिए दक्षता कार्यक्रम भी चलाए जायेंगे। राज्य में देशी नस्ल की मुर्गियों के जर्मप्लाज्म को गुणित करने के लिए पोल्ट्री इकाई का गठन किया जाएगा। इस मद में 1 करोड़ 30 लाख रू. की राशि मंजूर की गई है। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना "रफ्तार" के तहत ही देशी गौवंश राठी के फार्म को जैविक डेयरी फार्म के रूप में विकसित करने के लिए 1 करोड़ 5 लाख रू. की राशि व्यय की जाएगी। विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर पशु आहार प्रसंस्करण इकाईयों की स्थापना की परियोजना को भी स्वीकृति मिली है। डेयरी व्यवसाय में जुटे ग्रामीण युवाओं और महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक उत्थान के लिए मूल्य संवर्द्धन उत्पादों के विकास की एक परियोजना को भी इस वर्ष लागू किया जायेगा। विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा उपचार एवं फार्म की बेहतरी सेवाओं के लिए जयपुर स्थित स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के विद्यार्थियों के हेतु आवासीय सुविधाओं की स्वीकृति भी प्राप्त हुई है।

कुलपति सन्देश

(73वें स्वाधीनता दिवस पर राजुवास के दीवान-ए-आम में ध्वजारोहण के बाद कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा के उद्‌बोधन का सारांश यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।)

सम्मानित अतिथिगण, राजुवास के डीन–डायरेक्टर्स, फैकल्टी सदस्य, अधिकारी, कर्मचारी बंधुओं, प्रिय विद्यार्थियों, राजुवास परिवार के सदस्य, नागरिकों, प्रेस–मीडिया बंधुओं। इस महान देश की आजादी की 73वें महापर्व पर मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। आजादी की जंग लड़ने वाले स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों का त्याग, बलिदान और करोड़ों देशवासियों ने यातनाएं और तकलीफें झेलकर देश को आजाद करवाया हम उनका पुण्य स्मरण करते हुए सलाम करते हैं। हम सभी राष्ट्रीय एकता, अखंडता और इसकी सलामती के लिए प्राण–प्रण से जुटेंगे और एक सुखी और समृद्ध भारत के निर्माण में अपना योगदान देंगे। पिछले 9 वर्षों में विश्वविद्यालय ने विभिन्न क्षेत्रों में आशातीत प्रगति करते हुए आर्थिक संसाधनों में 900 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है। इस वर्ष को दशाब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय राज्य में एक उच्च कोटि का संस्थान है जो पशुचिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में नित नए आयामों को स्थापित कर रहा है। राष्ट्रीय स्तर की रैंकिंग में यह विश्वविद्यालय देश के शीर्ष विश्वविद्यालयों में शामिल हो रहा है जो इसकी उत्कृष्टता का परिचायक है। हमारे लिए यह वर्ष उपलब्धि भरा रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर को यू.जी.सी. 12–बी एक्ट के तहत मान्यता प्रदान की गई है। वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर) की स्नातक डिग्री को भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् की प्रथम अनुसूची में शामिल किया गया है। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना "रफ्तार" के अन्तर्गत वेटरनरी विश्वविद्यालय को वर्ष 2019–20 के लिए 11 करोड़ 95 लाख रूपये अनुदान की स्वीकृति प्रदान की है। इससे विश्वविद्यालय में 8 नई परियोजनाएं प्रारंभ की जाएगी। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर इसी वर्ष से पशु रोग निदान सेवाएं भी पशुपालकों को सुलभ करवाई गई है। कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर और 13 प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा विभिन्न जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में पिछले एक वर्ष में 1146 वैज्ञानिक पशुपालन शिविरों का आयोजन करके 34 हजार 642 किसानों और पशुपालकों को लाभान्वित किया गया है। विश्वविद्यालय की पशुचिकित्सा सेवाएं राज्य में सर्वश्रेष्ठ हैं तथा निरन्तर अत्याधुनिक सुविधाओं में बढ़ोतरी हो रही है। वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर की क्लिनिक्स में सुपर स्पेशलिटी कॉम्प्लेक्स का शुभारंभ हो चुका है। फैको पद्धति से पशुओं की आंखों के ऑपरेशन और जयपुर में हिमोडायलेसिस मशीन से गुर्दे के रोगों की अत्याधुनिक उपचार सुविधाएं मुहैय्या करवाई गई है। राज्य में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन के क्षेत्र में किये जा रहे अनुसंधान और प्रसार शिक्षा कार्यों के सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं। पशुपालकों एवं किसानों की वर्तमान में जरूरत को देखते हुए विश्वविद्यालय जैविक पशुपालन उद्यमिता विकास को अपनी प्राथमिकता देगा। विश्वविद्यालय के दशाब्दी वर्ष में सभी महाविद्यालयों और संस्थाओं में पशुचिकित्सा शिक्षा जागरूकता अभियान चलाकर जैविक पशुपालक संवेदीकरण, देशी गौवंश के महत्व और पशुरोग निदान सेवाएं वर्ष पर्यन्त कृषकों और पशुपालकों को मिलती रहेगी। समाज, राज्य और देश की जरूरतों के मुताबिक हमने अपने कार्यक्रम और योजनाओं पर विशेष ध्यान रखा है, जिससे यह विश्वविद्यालय अपनी उपादेयता सिद्ध कर सके।

जय हिन्द !

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 2, 10, 17 एवं 21 अगस्त को गांव आसलसर, घाधूं, पण्डरेऊ एवं अजीतसर गांवों में तथा 20 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 135 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 6, 9, 13, 16 एवं 19 अगस्त को गांव 13एफएफ–श्रीकरणपुर, माणकासर, साधुवाली, 27ए एवं रामसराजादान गांवो में तथा दिनांक 24 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 189 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 14, 17 एवं 22 अगस्त को गांव उबेरा, करजिया एवं उपलाखेजडा गांवो में तथा दिनांक 20 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 89 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 19, 20, 21 एवं 22 अगस्त को गांव कुशलपुरा,फिरवासी, पंडोराई एवं थानु गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 109 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 6, 13 एवं 20 अगस्त को गांव भराई, ढाल एवं रामावास गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 82 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 6, 9 एवं 19 अगस्त को गांव सलामपुरा, विकास नगर एवं उन्तिया गांवों में तथा दिनांक 17 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 119 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 7 एवं 17 अगस्त को गांव झारोंटी, जहानपुर एवं बुढवारी कलां गांवो में तथा 6 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 8 महिला पशुपालकों सहित कुल 58 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 7, 13, 14, 16 एवं 17 अगस्त को गांव सिलाय, भैरूपुरा, अरनियामाल, झोपडिया एवं मेहन्दवास गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 120 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 9, 13, 14, 17 एवं 21 अगस्त को गांव बालादेसर, अरजनसर, नाल, सोमलसर एवं मुकाम गांवों में तथा दिनांक 24 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 153 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 133 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 2, 5, एवं 6 अगस्त को गांव बगतरी, सुरला एवं ढाबा गांवों में तथा दिनांक 8, 19 एवं 26 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 133 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 14, 16 एवं 17 अगस्त को गांव नवाबपुरा, विजयपुर एवं तुम्बड़िया गांवों में तथा दिनांक 20 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 113 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 17, 19 एवं 22 अगस्त को गांव फूलपुर, गोपालपुरा एवं टेहरी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा 211 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 5, 7, 10, 14, 17, 19, 21 एवं 23 अगस्त को गांव मणई, पालड़ी पवारा, माणकलाव, बड़ली नहर, सोढ़ो की ढाणी, संत कृपाराम नगर, उम्मेदनगर एवं मथानिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 211 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी झुंझुनूं द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 20, 22 एवं 26 अगस्त को गांव बहादुरवास, जेतुसर एवं मडांसी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 82 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 3, 22 एवं 24 अगस्त को गांव रामसरा, फेफाना वं बरवाली गांवों में एक दिवसीय तथा 6–7 अगस्त कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 115 किसानों ने भाग लिया।

सितम्बर माह में पशु प्रबंधन कैसे करें

इस वर्ष पूरे देश में अत्याधिक वर्षा हुई है और हमारे राज्य में भी लगभग सभी स्थानों पर अच्छी बरसात हुई है व कई जिलों में बाढ़ के भी हालात बने हुए हैं। अच्छी बरसात से पर्याप्त मात्रा में पशुओं के लिए चारा उपलब्ध है और पोखर, तालाब, नदी–नाले पानी से भरे हुए है। वातावरण में नमी, घासफूस, गन्दगी इत्यादि के कारण इस मौसम में मच्छर, मक्खी, कीट, पंतगे काफी संख्या में पैदा हो जाते है जो कि बहुत प्रकार के संक्रमण के संवाहक हो सकते हैं। ये मच्छी, मक्खी, कीट–पंतगें पशुओं में कई प्रकार के रोग फैलाते हैं जिनमें मुख्यरूप से विषाणुजनित रोग जैसे तीन दिन का बुखार, रक्तपरजीवी रोग जैसे बैबेसिओसिस, थैलेरिओसिस, ट्रिपैनोसोमिएसिस, ऐनाप्लास्मोसिस पशुओं को ज्यादा प्रभावित करते है। इसके साथ ही इस मौसम में पशुओं के शरीर पर उपस्थित बाह्य परजीवी जैसे कि जूं, चींचड़ इत्यादि बहुत सक्रिय हो जाते है। सितम्बर माह आते आते वर्षा लगभग समाप्त होने लगती है और रात के समय थोड़ी ठंडक का आभास होने लगता है। कई बार रात के समय तापमान में अचानक गिरावट आती है जिसकी वजह से छोटे–बड़े सभी प्रकार के पशुओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और छोटे पशुओं में न्यूमोनिया जैसे रोग भी हो सकते हैं। हरे चारे की बहुतायत के कारण पशु कई प्रकार के पेट सम्बन्धी विकारों से भी प्रभावित होते है। बड़े पशुओं में कब्ज, दस्त जैसे सामान्य विकार होते हैं जबकि भेड़–बकरियों में फड़किया जैसे घातक रोग देखने में आते हैं। इस मौसम में पशु शरीर पर घावों में कीड़े भी पड़ जाते हैं जिससे पशु काफी परेशान होता है। अतः पशुपालकों को इस मौसम में अपने पशुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए और सावधानियां रखनी चाहिए :

1. रात्रि में मौसम ठंडा होने से छोटे पशुओं में न्यूमोनिया जैसे रोगों से बचाव के लिए उन्हें छप्पर अथवा पेड़ के नीचे बांधे।
2. गन्दगी और जल भराव से विभिन्न प्रकार के मच्छर–कीट पैदा होते हैं अतः पशुओं के बाड़े को सूखा रखें एवं बाड़े की साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखें।
3. बाहय परजीवियों के नियंत्रण के लिए पशुओं को बाहरी संक्रंमित पशुओं के संपर्क से दूर रखें तथा नियमित रूप से बाहय कृमिनाशक दवा पशु के शरीर पर जरूर लगायें चूंकि ये दवाईयां जहरीली होती हैं। अतः पशुपालक बाह्य कृमिनाशक दवा पशुओं के शरीर पर लगाते समय सान्द्रता एवं पानी में घोल की मात्रा का अवश्य ध्यान रखे तथा दवाई लगी रहने तक पशु को चाटन नहीं दें। बाह्य कृमिनाशक दवा शरीर पर लगाते समय इसे पशु की आंख, नाक एवं मुंह से दूर रखें। पशुपालक भी दवा के सीधे संपर्क में नही आयें।
4. पशुओं को अधिक चारा खाने से रोकें।
5. पशु के बीमार होते ही तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

परजीवी रोगों से पशुओं का बचाव एवं उपचार

मनुष्य जीवन का सुख, स्वास्थ्य सम्पदा एवं सम्पूर्णता प्रकृति के अनुदानों पर आश्रित है। स्वस्थ पशु एवं विशाल वन सम्पदा प्रकृति की आधारभूत आवश्यकता है। हमारे किसान भाइयों से बढ़कर शायद ही कोई पशुओं के महत्त्व को समझता हो। पशुधन किसानों की खुशहाली एवं आर्थिक सम्पन्नता का प्रतीक आदिकाल से माना गया है।

पशु स्वास्थ्य एवं परजीवी रोग–

स्वस्थ पशु ही उत्पादक हो सकते हैं। पशुओं से होने वाले परजीवी रोगों के अधिकतर लक्षण अच्छी तरह प्रकट नहीं होते, उत्पादकता जरूर गिर जाती है। किसान भाई समझ नहीं पाते कि दूध उत्पादन में गिरावट क्यों आ गयी, बैल जल्दी थक जाते हैं। छोटे पशुओं की बढ़वार धीमी हो जाती है। पशु कभी ठीक से खाता है लेकिन अंग नहीं लगता है। ऐसे में पशु पालक अच्छा व अधिक खिलाने की कोशिश करते हैं, लेकिन सब निरर्थक होता है। ऐसी परिस्थिति में आपके पशु को परजीवी रोग हो सकता है। परजीवी रोग भी कई प्रकार के होते हैं जैसे आंतों, पेट, लीवर में होने वाले गोल,चपटे या फीते के आकार के कृमि। ये कृमि काफी बड़े होते हैं और दूसरे रक्त में या आंतों, में पाये जाने वाले सूक्ष्म परजीवी । ये आँखों से दिखाई नहीं देते। सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा देखना ही सम्भव है। तीसरे प्रकार के परजीवी तो प्रायः सभी पशुओं में देखे जा सकते हैं। ये बाह्य परजीवी जिन्हें किलनी या चीचड़ भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त खून चूसने वाली मक्खियाँ एवं मच्छर भी रोग फैलाने के लिए जिम्मेदार हैं।

परजीवी रोग के प्रमुख लक्षणः–

- गाय भैंस में अधिकतर देखा गया है कि लीवर में चपटे कृमि हो जाते हैं। भूख न लगना, निचले जबड़े के बीच सूजन आ जाना, छूने पर खाल में खुश्की महसूस होना, पशु का सूखते जाना, कभी दस्त कभी कब्ज, हल्का बुखार, कमजोरी तथा कभी–कभी गिर पड़ना या मृत्यु हो जाना, इस रोग के लक्षण हो सकते हैं।
- आंतो व पेट में होने वाले गोल व चपटे कृमि पशुओं के लिए हानिकारक है। पशुओं में पतले बदबूदार दस्त, पशुओं का सूखते जाना, खाल की खुश्की इसके प्रमुख लक्षण हैं। कभी–कभी गाय भैंस के बच्चों में छोटे गोल कृमि भी हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त सूक्ष्म परजीवी भी पतले दस्तों का कारण होते हैं। बच्चों में दस्त के साथ कभी खून व आँव भी आने लगती है और उपचार समय पर न होने पर मृत्यु की सम्भावना रहती है।
- पशुओं के खून में पाये जाने वाले सूक्ष्म परजीवी जैसेः थाइलेरिया, बबेसिया तथा ट्रिपनोसोमा किलनी तथा खून चूसने वाली मक्खियों से फैलने वाले परजीवी स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक हैं। अतः पशुओं के खून की जाँच करवाना आवश्यक है।
- किलनी एवं मक्खियाँ पशुओं में खून चूसकर उन्हें कमजोर कर देती है। पशु रक्त–अल्पता से पीड़ित रहते हैं। चोट लगे घाव पर कुछ मक्खिया अण्ड दे देती है और कीड़े पड़ जाते है। ऐसी स्थिति में घाव आसानी से ठीक नहीं हो पाते।

परजीवी रोगों की रोकथाम

परजीवी रोग कोई छूत का रोग नहीं है। ये रोग किसी माध्यम के कारण फैलते हैं। अतः यदि माध्यम पर किसी तरह से रोक लगा दी जाये तो रोग की रोकथाम स्वतः ही हो जाती है। देखा गया है कि गाँवों के तालाबों में विभिन्न प्रकार के घोंघें होते हैं। ये स्वयं तो पशुओं के लिए हानिकारक होते हैं किन्तु रोग फैलाने में माध्यम का कार्य करते हैं। अतः इनकी रोकथाम अति आवश्यक है। तालाबों के आस–पास की हरी घास, कीचड़ व गन्दे पानी से पशुओं को दूर रखें। पीने के लिए उन्हें स्वच्छ पानी दें। तालाब के चारों और कंटीले तार लगाये जा सकते हैं।

बत्तख पाली जा सकती है जो घोघों का खा जाती है। पशु चिकित्सक की सलाह से कुछ दवाओं का छिड़काव भी किया जा सकता है जो घोंघों का रोकने का कारगर तरीका हो सकता है।

पशुओं की समय–समय पर जाँच आवश्यक है। रोग का प्रथम चिन्ह पाये जाने पर शीघ्र उपचार, आपको आर्थिक संकट से बचा सकता है। पशुओं को जहां तक संभव हो सके किलनियों से मुक्त रखना चाहिए। किलनियां पशुओं में रक्त के भयावह रोग जैसे– थाईलेरियोसिस, बेबिसिओसिस फैलाती है और खून भी चूसती है व उन्हें कमजोर बनाती है। इसी तरह विभिन्न प्रकार की खून–चूसने वाली मक्खियों से भी पशुओं को मुक्त रखना चाहिए। प्रमुख सावधानियों में पशुघर एवं आसपास की सफाई, पशुघर के फर्श का सूखा रहना। घर कच्चा हो तो समय–समय पर लीपना और यदि पक्का हो तो टूटे फर्श की मरम्मत व पुताई जरूरी है। बरसात व उसके बाद कुछ दवाओं का छिड़काव लाभप्रद होता है। इसी प्रकार गोबर का ढ़ेर अधिक दिन नहीं लगने देना चाहिए। पशुघर के आसपास चूना छिड़कना, तालाब या पोखर में तेल का छिड़काव मक्खी मच्छर की रोकथाम का कारगर उपाय है। बाजार में उपलब्ध ऐलबेन्डाजोल बोलस या सीरप 5 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शारीरिक भार या हाईटेक बोलस 0.5 मिलीग्राम/किलोग्राम शारीरिक भार के हिसाब से मुंह सेदी जा सकती है। इन्जेक्शन द्वारा आइवर–मेक्टीन 0.5 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शारीरिक भार के अनुसार दी जा सकती है जो आंतरिक एवं बाह्य परजीवी दोनों के लिए कारगर है।

डॉ. राजेश नेहरा
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (मो. 9461504858)

विटामिन–ए की कमी (हाइपोविटामिनोसिस)

विटामिन–ए एक बहुत ही महत्वपूर्ण और पशु के पालन–पोषण के लिए बहुत जरूरी पदार्थ होता हैं। विटामिन –ए जितना आवश्यक मनुष्य के लिए होता हैं उतना ही आवश्यक पशुओं के लिए होता हैं। शरीर की कई क्रियाओं के संचालन के लिए विटामिन–ए बहुत जरूरी होता हैं। विटामिन–ए की कमी से पशु में रतौंधी नामक रोग हो जाता है, कभी–कभी तो प्रभावित पशु दिन में भी नहीं देख पाता हैं। प्रभावित गाय की चमड़ी रूखी तथा कटी–फटी सी हो जाती है तथा जगह–जगह से खुरचन उतरती रहती है। पशु की वृद्धि कम होती हैं तथा कमजोर हो जाता हैं। पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती हैं। इसकी कमी से स्पर्मेटोजेनेसिस (शुक्राणुजनन) प्रभावित होने से सक्रिय शुक्राणुओं की संख्या कम हो जाती हैं। आंखों में सफेद झांई–सी बन जाती है तथा पानी भर जाने से आंखें बाहर की ओर निकल आती हैं। आंखों से लगातार आंसू गिरते रहते हैं। विटामिन–ए जो पशु को मिलता हैं उसका 80 प्रतिशत भाग तो शरीर में अवशोषित हो जाता हैं और 20 प्रतिशत भाग अवशोषित नहीं होता हैं। 80 प्रतिशत का 20–30 प्रतिशत संयुक्त रूप से होता हैं जो शरीर से बाहर गोबर में चला जाता हैं। 10 से 30 प्रतिशत आक्सीडाइन्ड भाग पेशाब के द्वारा स्त्रावित हो जाता हैं। केवल 30 से 50 प्रतिशत विटामिन–ए ही शरीर में संग्रह होता हैं जो लीवर और अन्य उत्तकों में संग्रह होता हैं।

विटामिन–ए की कमी होने के निम्नलिखित कारण हैं–

1. प्राथमिक कारण
2. द्वितीय कारण

1. **प्राथमिक कारण–** पशुओं के खाने में हरे चारे की कमी। हरे चारे की कमी किसी भी वजह से हो सकती है।

द्वितीय कारण–

1. **वातावरण का तापमान–** जब वातावरण का तापमान ज्यादा होता है तो पशु के शरीर में विटामिन्स की जरूरत भी बढ़ जाती है। इसलिए गर्मी के दिनों में पशु को विटामिन–ए की ज्यादा जरूरत पड़ती है।
2. **पशु आहार–** अधिक दानायुक्त आहार व सुखा चारा देने से विटामिन–ए की कमी रहती है। कई दिनों तक तरल पैराफीन देने से विटामिन–ए की कमी हो जाती है क्योंकि विटामिन–ए वसा युक्त होता है और ये तैलीय दवाइयों के साथ संयुक्त होकर आहार नाल से बाहर स्त्रावित हो जाता है जिससे शरीर में इसकी कमी हो जाती है।
3. **जीर्ण रोग–** आंतों तथा लीवर की लम्बी बीमारी की वजह से विटामिन–ए की कमी आ जाती है क्योंकि लीवर में ही विटामिन–ए का संग्रहण होता है।
4. **संक्रामक रोग–** कई संक्रामक रोगों के कारण भी इसकी कमी हो जाती है।
5. **हार्मोन्स तथा एन्जाइम–** जिन पशुओं में हाइपोथायराडिज्म होता है उनमें केरोटिन से विटामिन–ए नहीं बन पाता है और इसकी कमी हो जाती है। कैरोटीनेज नामक एन्जाइम की कमी की वजह से भी ये रोग होता है। क्योंकि केरोटीनेज एन्जाइम कैराटीन को विटामिन–ए में बदलने का काम करता है।
6. **रसायनिक उर्वरक–** नाइट्रेट और नाइट्रारट जिनको खेती में खाद के रूप में काम में लेते है ये भी कैरोटीन को विटामिन–ए में बदलने में रूकावट करते है इसकी कमी हो जाती है।
7. **अन्य विटामिन–** शरीर में विटामिन–ई और विटामिन–सी की कमी से भी यह रोग होता है क्योंकि विटामिन–ई की कमी होने पर विटामिन ए का अवशोषण नहीं हो पाता है। विटामिन–ई में एन्टी आक्सोडेन्ट और रोग प्रतिरोधक गुण भी होते हैं।
8. **कृमिनाशक का उपयोग–** समय–समय पर कृमिनाशक दवाईयों का उपयोग नहीं करने पर पेट के कीड़ों की मात्रा बढ़ जाती है जो कि कैरॉटीन को विटामिन–ए मे नहीं बदलने देती है।

विटामिन–ए की कमी का उपचार–

1. पशु के खाने में हरा चारा मिलायें।
2. पशुओं में विटामिन ए का टीका लगवायें।
   - ❖ बछड़े तथा गाय में 10,000 से 20,000 IU प्रति किलो शरीर भार से
   - ❖ भेड़ तथा बकरियों में 6,000 IU प्रति किलो शरीर भार से
   - ❖ शूकर में 2,000 से 3,000 IU प्रति किलो शरीर भार से
3. खाने में अधिकतम 13,500 IU प्रति किलो सम्पूर्ण आहार में मिला देंवे।
4. पशुओं के समय–समय पर पेट की परजीवी मारने की दवा मिलायें।
5. उपचार का परिणाम गम्भीर स्थिति में तो जल्दी और पूरा होता हैं लेकिन अगर बीमारी लम्बे समय से हैं तो पशु का ठीक होना मुश्किल हैं।
6. बछड़े जिनमें दौरे आने लगते हैं क्योंकि इसकी कमी से सेरीब्रोस्पाइल द्रव्य का दाब बढ़ जाता हैं उनमें विटामिन–ए के टीके का परिणाम 48 घण्टे बाद आता है या मिलता है।
7. गाय जिनमें आंकुलर फोंम आ जाती हैं विटामिन–ए की कमी से वो इस उपचार से ठीक नहीं होती हैं।

हाइपोविटामिनोसिस–ए की रोकथाम–

1.पशु को हरा चारा सुबह–शाम दोनों समय खिलाना चाहिए।

2.सभी जानवरों में कम से कम रोज विटामिन–ए की मात्रा 40 प्न झह ठॅ देना चाहिए ताकि विटामिन–ए की कमी को रोका जा सकें।

3.गर्भवती पशु, दूध देने वाली गाय में और बढ़ते हुए बछड़े में इसकी मात्रा कम से कम 50 से 75 प्रतिशत बढ़ा देनी चाहिए।

विटामिन–ए की मात्रा जो पशु के खाने में होनी चाहिए–

पशु का प्रकार		विटामिन–ए की मात्रा (IU Kg bwt daily)
वृद्धि करता बछड़ा	–	40
6 महीने का बछड़ा	–	40
गर्भवती पशु में	–	70–80
दूध देने वाले पशु में	–	80

- ❖ प्रोटीजीन्स खाना खिलाना चाहिए क्योंकि प्रोटीन इसके संग्रह में सहायता करता हैं।
- ❖ पशुओं को विटामिन–ए का टीका लगाते रहना चाहिए।

समय – 50–60 दिन में एक बार

मात्रा – 3000–6000 IU/Kg bwt.

- ✓ मुंह से खिलाने वाली दवाई – एक गोली Vit-A की मात्रा 2-8mg/Kg bdwt देनी चाहिए गर्मियों में।
- ✓ गर्मियों में 10 ग्राम पाउडर विटामिन–ए पानी में मिलाकर देना चाहिए ताकि इसकी कमी ना हों।
- ✓ पाउडर और गोली दोनों एक साथ देना और भी फायदेमंद होता हैं और इसका प्रभाव 3 दिन में दिखने लगता है।

–डॉ. जे.पी. कच्छावा (मो. 9414069330) डॉ. सीताराम गुप्ता,
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा, सहायक आचार्य
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–सितम्बर, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	बांसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, धौलपुर, सवाई –माधोपुर, अलवर, बून्दी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा, अजमेर, बीकानेर, सीकर
तीन दिन का बुखार	गौवंश, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जयपुर, चित्तौड़गढ़, अलवर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़, ऊंट	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, बीकानेर, पाली, सिरोही, बूंदी, बारां
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊँट	जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, हनुमानगढ़, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर
गलघोंटू	भैंस, गौवंश	हनुमानगढ़, धौलपुर, ज यपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर, अलवर, झुंझुनूं, अजमेर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानगर, डूंगरपुर, उदयपुर
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, नागौर
फड़किया रोग	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, बारां, बूंदी, हनुमानगढ़
थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस	भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर , हनुमानगढ़, चूरू, सवाई– माधोपुर, श्रीगंगानगर, जयपुर, जोधपुर, सीकर, डूंगरपुर, भीलवाडा
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस	बूंदी, सीकर, श्रीगंगानगर, जयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा धौलपुर, हनुमानगढ़
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं पर्ण–कृमि)	भैंस, गौवंश, भेड़, बकरी, ऊँट	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाई –माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी | निजामुद्दीन ने भेड़-पालन से आर्थिक सम्बल पाया

राजस्थान में वर्षा आधारित कृषि की अनिश्चितता के बीच पशुपालन आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का एक अच्छा विकल्प रहा है। कभी भेड़ पालन को दोयम दर्जे का कार्य माना जाता था लेकिन अब राजस्थान में भेड़ पालन बहुत से भूमिहीन किसानों का आर्थिक सम्बल बना हुआ है। भेड़ पालन का ऐसा ही एक उदाहरण प्रस्तुत किया है चूरू जिले के गांव देपालसर के निजामुद्दीन ने। निजामुद्दीन के पास 1.25 बीघा जमीन है जिस पर वे वर्षा आधारित खेती करते थे किन्तु आय पर्याप्त नहीं होने के कारण भेड़ पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाया। दो भेड़ों से व्यवसाय प्रारम्भ करने वाले निजामुद्दीन के पास वर्तमान में 50 भेड़ें व 6 बकरियां है। प्रतिवर्ष 10–15 भेड़े, मैमने व भेड़ों की ऊन बेचकर लगभग एक लाख रू. प्रतिवर्ष की आमदनी प्राप्त कर लेतें हैं। 50 वर्षीय निजामुद्दीन ने भेड़पालन की मदद से अशिक्षा व गरीबी को पीछे छोड़ते हुए आर्थिक आत्मनिर्भरता की एक मिसाल कायम की है। इसी प्रकार इनका व्यवसाय निरन्तर चलता रहता हैं। ''मेरा गांव मेरा गौरव'' योजना के अन्तर्गत देपालसर गांव गोद लेने के बाद से वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू के निरन्तर सम्पर्क में रहते हुए और प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर खनिज लवण की उपयोगिता, संतुलित आहार, कृमिनाशक दवाईयां पिलाना एवं टीकाकरण की जानकारी लेते रहते हैं। शिक्षित और बेरोजगार युवाओं के लिए निजामुद्दीन एक आदर्श साबित हो सकते हैं।
सम्पर्क– **निजामुद्दीन,** गांव देपालसर मो. 7792512870

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

मानसून के मौसम में वर्षा जल और चारे का करें संरक्षण

प्रिय, किसान और पशुपालक भाइयों और बहनों !

हमारे देश में मानसून के आगमन के साथ प्रचुर मात्रा में वर्षा जल और हरे चारे की उपलब्धता बढ़ जाती है। इससे किसान और पशुपालक समुदाय हर्षित होता हैं क्योंकि पशुधन के लिए पेयजल और खाद्य जरूरतों को पूरा करने में आसानी हो जाती है। हमें पूरे वर्ष पशुओं के खान–पान की व्यवस्था करनी पड़ती है। अतः इस समय मिले इन प्रचुर संसाधनों का संरक्षण करके भविष्य की जरूरतों को भी पूरा करने के लिए सचेष्ट रहना चाहिए।

इस बार मानसून की अच्छी बरसात होने से तालाब, जोहड़, झीलों में पानी प्रचुर मात्रा में आया है। हमें वर्षा जल के संरक्षण उपायों को लागू करने में कोताही नहीं बरतनी चाहिए। 19वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान 11.27 प्रतिशत पशुधन के साथ देश में दूसरे स्थान पर है। इसके अलावा यहां वन्य जीव–जन्तुओं की सैंकड़ों प्रजातियां भी बड़ी संख्या में मौजूद हैं। खेतों के कुण्ड और गांवों में जोहड़, तालाब और झीलें हमारे पशुधन और वन्य जीव–जन्तुओं की प्यास बुझाने के पारंपरिक स्रोत रहे हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि हमारी पृथ्वी 71 प्रतिशत जल से घिरी हुई है लेकिन इसका 1 प्रतिशत से भी कम पानी पीने के योग्य है। अतः हमें जल के महत्व को समझना होगा। वर्षा हमारे लिए अमृत तुल्य है। अतः सभी किसान और पशुपालक भाई और बहिनों को पारंपरिक जल स्रोतों, खेतों में टांकों और घर के कुंड में वर्षा का जल संग्रहण करने में सहयोगी बनकर अपना योगदान करना चाहिए। बरसात के मौसम में किए गये वृक्षारोपण के भी हमें दोहरे–तिहरे लाभ मिलते हैं। गोचर, गांव व खेतों में पौधारोपण अधिकता में सक्रिय भागीदारी हम सबके हित में है। खेतों की मेड़ों पर लगाये गए वृक्षों से वर्ष पर्यन्त लकड़ी, पशुओं के खाद्य रूप में पत्तियां और खेत की उपजाऊ भूमि का कटाव रूकता है और मृदा का संरक्षण किया जा सकता है। अतः हमें इस मौसम का पूरा फायदा उठाते हुए भविष्य को भी संवारने का कार्य करना है।

–प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414431098

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **सितम्बर 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
प्रो. अन्जु चाहर **7597741604** वेटरनरी मेडिसन विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं में रेबीज रोग के लक्षण एवं उनके उपाय	05.09.2019
डॉ. प्रवीण बिश्नोई **9982361529** मुख्य अन्वेषक, पशु आपदा प्रबंधन एवं तकनीकी केन्द्र, राजुवास, बीकानेर	बाढ़ एवं अतिवृष्टि के समय पशुओं की देखभाल एवं स्वास्थ्य प्रबंधन	19.09.2019

संपादक
प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224